स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
द्वितीय सेमेस्टर

14 MAY

FRIDAY
APRIL
18

5-5-2020

संदेसनि मधुबन-कूप भरे।
जो कोउ पथिक गये हैं ह्याँ ते फिरि नहिं अवन करे॥
कै वै स्याम सिखाय समोधे कै वै बीच मरे?
अपने नहिं पठवत नँदनंदन हमरेउ फेरि धरे॥
मसि खूँटी कागद जल भींजे, सर दव लागि जरे।
पाती लिखैं कहो क्यों करि जो पलक कपाट अरे ?-8॥

व्याख्या :- विद्यार्थियों पदों को आगे देखते हुए हमलोग ये पाते हैं कि बातों का आधार वस्तु बदलता हुआ प्रतीत हो रहा है। जहाँ पिछले पद में हमने देखा था कि प्राकृतिक उपादान पर भी नायिका के विरह का प्रभाव पड़ रहा है। यहाँ दूसरी बात है, यहाँ गोपियाँ कह रही हैं कि हे। उद्धव जी हमलोगों ने कृष्ण को अपना संदेश भेजने का प्रयास बहुत पहले कर दिया था, आप तो आज पधारे हैं। वो कहती हैं कि हमलोगों ने श्रीकृष्ण को संदेश भेजने के लिए इतनी चिट्ठियाँ भेजी हैं कि उससे मधुपुर अर्थात् मथुरा के सारे कुँए भर गये होंगे। यहाँ अतिशयोक्ति अलंकार है।

गोपियाँ आगे कहती हैं कि जितने पथिक उधर
जाते दिखे थे उन सबके माध्यम से हमलोगों ने
भेजी थी परंतु कोई लौट कर प्रत्युत्तर देने
आया। हमलोगों को पता नहीं कि वे क्यों नहीं
आये, शायद कृष्ण ने उन्हें समझा-बुझा कर
अपने अनुकूल कर लिया होगा, या ऐसा भी हो सकता
है कि वे सारे-के-सारे बीच रास्ते में ही मर
होंगे। शायद यही सब कारण है कि आज तक हमारे
संदेशों का कोई जवाब नहीं आया, उल्टे
आप ही आये जो निर्गुण की घुट्टी ले हमें का
है। उनका कहना है कि वो कृष्ण जो अनवरत
का मुख ही देखा करते थे वे आज इतने निष्ठुर हो

20 SUNDAY

है कि वे स्वयं तो अपनी तरफ से कोई संदेश
ही भेजते हैं, हमलोगों ने जो संदेशा भेजा था
भी दबाकर रख लिया है। गोपियाँ सोचती हैं
कि क्या मथुरा में स्याही ही समाप्त हो गया

3

सन्देश आदि लिखा जा सकता था। फिर सोचती हैं कि
मधुबन के सारे कागज तो जल में नहीं भीग गये हैं जिसके
वे गल गये हैं जिससे उस पर लिखना भी संभव नहीं है,
फिर वो कल्पना करती हैं कि ऐसा भी हो सकता है
कि जिस सरकण्डे को तराश कर कलम बनाया जाता था
उनमें ही आग लग गयी हो, जिसके कारण उनके
पास लिखने का साधन ही समाप्त हो गया हो।
अंत में गोपियाँ सोचती हैं, [illegible]
दोहों में कहती हैं कि संदेश भेजकर ही क्या
होगा, कोई उसे पढ़े तब तो उसके भावों को समझे
उसमें जो पीड़ा छुपी हुई है उसका अनुभव करे
और प्रत्युत्तर में संदेश भेजे। ऐसा लगता है
गोपियों को कि पाती लिख लिख कर क्या होगा,
कृष्ण तो उन्हें पढ़ना ही नहीं चाहता है, उसने तो
अपने कमलनयन के कपाट, पलकों को ही बन्द
कर लिया है। पलकों का कपाट ही लगा लिया
तो ऐसे में क्या उपाय हो सकता है।

22 TUESDAY APRIL 113-253 WK 17 MAR 14

4

विशालिओं इस पद में भी सूरदास जी
कवित्व का प्रयोग किया है और उसमे
है कि पूरे पद में निर्णय पूर्वक कोई बात
कही जा रही है इसलिए इसमें बांका संन्या
भाव है। मैंने पहले भी बताया है अतिशयोक्ति
अलंकार का प्रयोग सँदेसनि मधुवन कूप भरे
में आया है क्योंकि इस जो बात कही गयी है वह
प्रायोगिक या सामान्य, या विश्वसनीय बात न
अंतिम पंक्ति में पलक कपाट शब्द आया है इस
रूपक अलंकार है लेकिन निरंग रूपक है क्यों
एक ही अंग की तुलना यहाँ की गयी है। इस प्रकार
हम देखते हैं यह पद भी एक महत्वपूर्ण पद

कुमार रजनीकान्त

5/5/2024

5-5-2024

2014